निम्बार्क सम्प्रदाय के उत्सवों में लोक नृत्य की प्रथा

गौरव शुक्ला
संगीत प्रवक्ता
के0डी0एस0 महाविद्यालय, जौनपुर
Email: gauravshukl.simple@gmail.com

मानव और संगीत का सम्बन्ध अनादि काल से चला आ रहा हैं। अन्य ललित कलाओं की अपेक्षा संगीत मे मनोमग्ध करने की शक्ति अधिक है। मन की चंचल वृत्तियाँ संगीत के प्रभाव से रस मग्न होकर केवल श्रवण शक्ति में ही केन्द्रीभूत हो जाती है। अतः मन के नियत्रंण के लिए धर्माचार्यों ने संगीत का भक्ति के साथ संयोग कर दिया जो कालान्तर में भजन एवं संकीर्तन के नामों से प्रसिद्ध हुआ।

वैष्णव धर्म एवं दर्शन के चार प्रसिद्ध सम्प्रदाय है – सनक सम्प्रदाय (निम्बार्क सम्प्रदाय), श्री सम्प्रदाय, ब्रह्म सम्प्रदाय तथा रूद्र सम्प्रदाय है। इन सभी सम्प्रदायों के अधिष्ठाता भगवान विष्णुवासुदेव ही है। भगवान के हंसावतार के रूप में सनक सम्प्रदाय उत्पन्न हुआ। श्री निम्बार्काचार्य इस मत के प्रधान प्रवर्तक थे। जिनसे सनक सम्प्रदाय ही निम्बार्क सम्प्रदाय के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इनका दार्शनिक सिद्धान्त द्वैताद्वैत अथवा भेदा भेद के नाम से प्रसिद्ध है। इनका मानना था कि ब्रह्म अद्वैत और द्वैत (द्वैताद्वैत) दोनों ही है। जीव और ब्रह्म के बीच सम्बन्ध है, जो अंशाशि भाव से अंश और अंशी के बीच होता है। अपने अस्तित्व और क्रिया के लिए जीवात्मा की स्वतंत्र सत्ता नही है। इसके लिए जीव ईश्वराधीन रहते है।

इस परम्परा में हंस भगवान, निम्बार्काचार्य, निवासचार्य आदि लगभग 45 पीठाधीश्वर हो चुके है, वर्तमान में पीठ पर निम्बार्काचार्य श्री राधासर्वेश्वर देवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज विद्यमान है। ये सभी आचार्य संगीत एवं साहित्य के विद्वान रहे हैं। निम्बार्क सम्प्रदाय का प्रभाव ब्रज मण्डल, राजस्थान, हरियाणा, महाराष्ट्र जैसे प्रदेशों सहित सम्पूर्ण भारत पर रहा है। निम्बार्क सम्प्रदाय के प्रभाव विस्तार का मुख्य कारण माधुर्यभाव प्रधान भक्ति तत्व का आश्रय ग्रहण करना है। श्री निम्बार्काचार्य जी को ही सर्वप्रथम राधाकृष्ण की माधुर्यरसोपासना भक्ति प्रारम्भ करने का श्रेय है।

सरल भक्ति तत्व ने लोक में सहज ही अपनी पैठ बना ली। जब कोई विचार किसी संस्कृति के साथ क्रिया करता है तो नई – नई उत्पत्तियाँ होती है। ऐसा ही निम्बार्क सम्प्रदाय का लोकतत्वों से सम्पर्क के कारण भी हुआ। इस सम्प्रदाय में संगीत की परम्परा श्री निम्बर्काचार्य जी के गुरू नारद जी से चली आ रही है। इस सम्प्रदाय में भगवद् आराधना में संगीत का प्रयोग किया जाता है। यहाँ प्रातः कालीन सेवाओं में रूमया

उसार रागों का प्रयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त विशेष उत्सवों में भी संगीत का प्रयोग होता है। यहाँ सांगीतिक विधाओं में एक लगायन, समाज गायन, वाद्य वादन, नृत्य लीलानुकरण एवं लोक संगीत का विशेष महत्व है। मेरे शोध प्रपत्र का विषय है 'श्री निम्बार्क सम्प्रदाय में प्रचलित लोक नृत्य' अतः यहाँ मैं इस सम्प्राय में प्रचलित लोक नृत्य विधाओं का सविस्तार वर्णन कर रहा हूँ।

निम्बार्क सम्प्रदाय में लोक नृत्य मुख्यतः श्री कृष्ण जन्माष्टमी अथवा अन्य विशिष्ट अवतारों की जयन्तियों के उपलक्ष्य में आयोजित किये जाते है। इनमें प्रमुख रूप से ढाँड़ा – ढाँड़ी नृत्य, नरसिंह नृत्य, और कहरवा नृत्य का आयोजन किया जाता है, उपरोक्त लिखित नृत्यों का संक्षिप्त वर्णन प्रस्तुत है।

ढाँड़ा–ढाँड़ी नृत्य – इस नृत्य का आयोजन नन्दोत्सव के अवसर पर होता है।[1] इस सम्प्रदाय का राजस्थान में विशेष प्रसार हुआ था। ढाँड़ी जाति वही की है। अतः नन्दोत्सव में इन लोगों को ही नृत्य करने के लिये प्रायः आमन्त्रित किया जाता था। ये स्त्री – पुरूष का वेश धारण कर श्री कृष्ण के जन्म लेने की प्रसन्नता में आनन्द विभोर होकर नृत्य करते है। ढाँड़ी जाति की यह अपनी निजी कला है, जिसका प्रदर्शन परम्परागत है। नगरों में जहाँ ढाँड़ा जाति के लोगो को प्राप्त करना कठिन होता है, वहाँ युवक लड़कों को उनका रूप दे दिया जाता है और वे उनके समान ही नृत्य करते है।

नरसिंह नृत्य – नरसिंह नृत्य का आयोजन नरसिंह जयन्ती के अवसर पर किया जाता है। यह नृत्य मन्दिरों में प्रायः आधी रात्रि से प्रारम्भ कर दिया जाता है। सर्वप्रथम गणेश जी, फिर शिव जी और फिर वाराह भगवान का नृत्य होता है तदन्तर हिरण्यकश्यप प्रसन्नता से नृत्य करता है। सभी लोग अपने स्वरूप के अनुरूप चेहरे लगाकर आते है। तदन्तर प्रहलाद के शिक्षक अपनी स्थिति के अनुरूप बालकों के साथ पूर्व कथा का नृत्य करते है, फिर कागज के खम्भे को फाड़ कर नरसिंह भगवान प्रगट होते है, जो हिरण्यकश्यप का अपने नखों से पेट चीर देते है। 'जै, जै, जै, जै, जै, जै कहते हुए नरसिंह भगवान घण्टों तक एक धीराद्वत एवं धीरोदात्त नायकों का सम्मिलित नृत्य करते है। विश्राम लेने के पश्चात् फिर वह अपनी नृत्य की दशा में आ जाते है। इस प्रकार यह नृत्य बहुत लम्बा चलता है।

कहरवा नृत्य – निम्बार्क सम्प्रदाय के केन्द्र ब्रज में बड़े विस्तार से फैले हुए है। श्री कृष्ण जन्माष्टमी, शरद पूर्णिमा अथवा प्रसन्नता के अन्य अवसरों पर श्री कृष्ण की सांगोपांग लीलाओं से सम्बन्धित लोकगीतों की रचना का ग्रामीण स्त्रियों द्वारा मन्दिरों के खुले भागों में कहरवा नृत्य करने की परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है। यह नृत्य केवल ग्रामीण केन्द्रों में ही सीमित है। इसके अतिरिक्त यहाँ की रासलीला

[1] वाजपेजी श्रीं कृष्णदत्त ब्रज का इतिहास, भाग 2, पृ०स० 127

विधाओं में भी लोक नृत्य का प्रभुत्व है। इसके अन्तर्गत किये जाने वाले नृत्यों में मयुर नृत्य, सामूहिक मण्डलाकार दण्ड वादन नृत्य तथा झूमर नृत्य आदि का विशेष स्थान है। इनका संक्षित परिचय प्रस्तुत है –

मयूर नृत्य – यह नृत्य श्री राधा जी की प्रसन्नता हेतु किया जाता है। इस नृत्य में श्री कृष्ण घुटनों के बल बैठे हुए छोटे – छोटे अनेक वृत्त बनाते हुए अति द्रुत गति से नृत्य करते है जो रास मण्डल के वातावरण को अलौकिक व दिव्य रस से परिप्लावित कर देते है।

दण्ड वादन नृत्य– इस नृत्य में श्री राधा – कृष्ण एवं उनकी सखियाँ अपने – अपने हाथों में छोटे –छोटे दण्ड को लेकर दगताल के अनुसार एक समान लय में दण्डों को परस्पर बजाते हुए नृत्य करते है। इसके अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की भाव भंगिमाओं द्वारा पंक्तिबद्ध तथा मण्डलाकार नृत्य करते हुए शनैः, शनैः नृत्य का समापन होता है यह नृत्य अत्यंत विलम्बित लय से प्रारम्भ होता है और तत् पश्चात द्रुत में प्रवेश कर जाता है।

झूमर नृत्य – इसका अर्थ है झूमकर गाते हुए नृत्य करना। इसमें राधा कृष्ण और संखियाँ समूह में गाते हुए ताली बजाकर नृत्य करते है।

नृत्य नटराज की सर्वोत्तम कला है। नृत्य मानव को साधना की उच्चावस्था में ले जाने में सक्षम है। ऐसी ऊँचाईयाँ जहाँ साधक द्वैत – अद्वैत स्वरूप से तदाकर होने की सामर्थ्य अर्जित कर ले। लोक नृत्यों के समावेशन द्वारा निम्बार्क सम्प्रदाय का भक्ति तत्व लोक स्वीकृत भक्ति भाव हो गया। निष्पक्ष विवेचन द्वारा ऐसा माना जा सकता है कि लोक नृत्यों ने निम्बार्क सम्प्रदाय की मधुरा भक्ति में रस तत्व को और रसीला – छटीला बना दिया। सामान्य जन नृत्य को लौकिक आनन्द का साधन मानते रहे है किन्तु निम्बार्क सम्प्रदाय के सम्पर्क में आकर यह लोक का तत्व स्वयं विशिष्ट बन गया। लौकिक आनन्द का माध्यम भक्ति का साधन बन गया। लोक नृत्यों ने निम्बार्क सम्प्रदाय के भक्ति तत्व को विस्तृत सामाजिक आधार व अपार लोकप्रियता प्रदान की। अनेक लोक नृत्य भी सम्प्रदाय के सम्पर्क में आकर विस्तृत मानव मूल्यों एवं आध्यात्मिक साधनों में सिद्धि प्राप्ति के समर्थ साधन बन गये। इस सांस्कृतिक आध्यात्मिक समेकन द्वारा विशिष्ट आध्यात्मिक, सांस्कृतिक उपलब्धियों का मार्ग प्रशस्त हो गया। यह यात्रा अनवरत जारी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. श्रीवास्तव, डॉ० प्रेम नारायण, निम्बार्क सम्प्रदाय (सिद्धान्त और साहित्य), निम्बार्क शोध संस्थान वृन्दावन, 1998 ।
2. सक्सेना, डॉ० राकेश बाला, ब्रज के देवालयों में संगीत परम्परा, संगीत कार्यालय हाथरस 1996।
3. शर्मा, डॉ० नारायण दत्त, निम्बार्क सम्प्रदाय और इनके कृष्ण भक्त हिन्दीं कवि, अशोक प्रकाशन, वृन्दावन, 1978।
4. सक्सेना, डॉ० राकेश बाला, मध्ययुगीन वैष्णव सम्प्रदायों में संगीत, राधा पब्लिकेशन्, नई दिल्ली 1990।